

॥ चमकप्रश्नः ॥

|| camakaprasnaḥ ||

अग्नाविष्णुसजोषसेमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युमैर्वाजैभिरागतम्॥

agnāviṣṇū sajoṣasemā vārdhantu vāṁ girāḥ | dyumnairvājebhirāgatam ||

वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रावश्च मे
श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे
वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च म ओजश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा च
म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूँषि च मे शरीराणि च
मे ॥ १ ॥

vājaśca me prasavaśca me prayatiśca me prasitiśca me dhītiśca me kratuśca me svaraśca me
ślokaśca me śrāvaśca me śrutiśca me jyotiśca me suvaśca me prāṇaśca me'pānaśca me
vyānaśca me'suśca me cittaṁ ca ma ādhītaṁ ca me vāk ca me manaśca me cakṣuśca me
śrotraṁ ca me dakṣaśca me balaṁ ca ma ojaśca me sahaśca ma āyuśca me jarā ca ma ātmā
ca me tanūśca me śarma ca me varma ca me'ṅgāni ca me'sthāni ca me parūṁṣi ca me
śarīrāṇi ca me || 1 ||

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा
च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं
च मे वशश्च मे त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च
मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे

कृतिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे ॥ २ ॥

jyaiṣṭhyaṁ ca ma ādhipatyam ca me manyuśca me bhāmaśca me'maśca me'mbhaśca me
jemā ca me mahimā ca me varimā ca me prathimā ca me varṣmā ca me drāghuyā ca me
vṛddham ca me vṛddhiśca me satyam ca me śraddhā ca me jagacca me dhanam ca me
vaśaśca me tviṣiśca me krīḍā ca me modaśca me jātam ca me janīṣyamāṇam ca me sūktam
ca me sukṛtam ca me vīttam ca me vedyam ca me bhūtam ca me bhaviṣyacca me sugam ca
me supatham ca ma ṛddham ca ma ṛddhiśca me kṛptam ca me kṛptiśca me matiśca me
sumatiśca me || 2 ||

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे
यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे
संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च
मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च
मे सुदिनं च मे ॥ ३ ॥

śam ca me mayaśca me priyam ca me'nukāmaśca me kāmaśca me saumanasaśca me
bhadram ca me śreyaśca me vasyaśca me yaśaśca me bhagaśca me draviṇam ca me yantā ca
me dhartā ca me kṣemaśca me dhṛtiśca me viśvam ca me mahaśca me saṁvicca me jñātram
ca me sūśca me prasūśca me sīram ca me layaśca ma ṛtam ca me'mṛtam ca me'yakṣmam ca
me'nāmayacca me jīvātuśca me dīrghāyutvam ca me'namitram ca me'bhayam ca me sugam
ca me śayanam ca me sūṣā ca me sudinam ca me || 3 ||

ऊर्कं च मे सूनृतां च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे
वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे बहु च
मे भूयश्च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे व्रीहियश्च मे यवाश्च मे

माषा॑श्च मे॒ तिला॑श्च मे॒ मुद्गा॑श्च मे॒ खल्वा॑श्च मे॒ गोधू॑माश्च मे॒ मसुरा॑श्च मे॒ प्रियंग॑वश्च मेऽण॑वश्च मे॒
श्या॒मका॑श्च मे॒ नीवारा॑श्च मे ॥ ४ ॥

ūrka ca me sūnṛtā ca me payāśca me rasāśca me ghṛtaṁ ca me madhu ca me sagdhīśca me
sapītiśca me kṛṣīśca me vṛṣīśca me jaitraṁ ca ma aubhidyaṁ ca me rayīśca me rāyāśca
me puṣṭaṁ ca me puṣṭīśca me vibhu ca me prabhu ca me bahu ca me bhūyāśca me pūrṇaṁ
ca me pūrṇataraṁ ca me'kṣītiśca me kūyāvāśca me'nnāṁ ca me'kṣucca me vrīhiyāśca me
yavāśca me māṣāśca me tilāśca me mudgāśca me khalvāśca me godhūmāśca me masurāśca
me priyaṅgavaśca me'ṇavaśca me śyāmakāśca me nīvārāśca me ॥ 4 ॥

अश्मा॑ च मे॒ मृत्तिका॑ च मे॒ गिरय॑श्च मे॒ पर्वता॑श्च मे॒ सिकता॑श्च मे॒ वन॑स्पतयश्च मे॒ हिरण्यं॑ च मेऽय॑श्च मे॒
सीसं॑ च मे॒ त्रपु॑श्च मे॒ श्यामं॑ च मे॒ लोहं॑ च मेऽग्नि॑श्च म॒ आप॑श्च मे॒ वीरु॑धश्च म॒ ओष॑धयश्च मे॒ कृष्ट॑पच्यं
च मेऽकृष्ट॑पच्यं च मे॒ ग्राम्या॑श्च मे॒ पशव॑ आ॒रण्या॑श्च॒ यज्ञेन॑ कल्पन्तां॒ वित्तं॑ च मे॒ वित्ति॑श्च मे॒ भूतं॑ च मे॒
भूति॑श्च मे॒ वसु॑ च मे॒ वसति॑श्च मे॒ कर्म॑ च मे॒ शक्ति॑श्च मेऽर्थ॑श्च म॒ एम॑श्च म॒ इति॑श्च मे॒ गति॑श्च मे ॥ ५ ॥

aśmā ca me mṛttikā ca me girayāśca me parvatāśca me sikatāśca me vanaspatayaśca me
hiraṇyaṁ ca me'yaśca me sīsaṁ ca me trapuśca me śyāmaṁ ca me lohaṁ ca me'gniśca ma
āpaśca me vīrudhāśca ma ośadhayaśca me kṛṣṭapacyaṁ ca me'kṛṣṭapacyaṁ ca me
grāmyāśca me paśava āraṇyāśca yajñena kalpantāṁ vittaṁ ca me vittiśca me bhūtaṁ ca me
bhūtiśca me vasu ca me vasatiśca me karma ca me śaktiśca me'rthaśca ma emaśca ma itiśca
me gatiśca me ॥ 5 ॥

अ॒ग्नि॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सोम॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सवि॑ता च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सर॑स्वती च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ पूषा॑ च॒
म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ बृह॑स्पतिश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ वरु॑णश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ त्वष्टा॑ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒
धा॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ विष्णु॑श्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मेऽश्वि॑नौ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ मरु॑तश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ विश्वे॑ च मे

दे॒वा इन्द्र॑श्च मे पृथि॒वी च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मेऽन्तरि॑क्षं च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे द्यौश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे दि॒शश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे
मूर्धा॑ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे प्र॒जाप॑तिश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे ॥ ६ ॥

agnīśca ma indraśca me somaśca ma indraśca me savitā ca ma indraśca me sarasvatī ca ma
indraśca me pūṣā ca ma indraśca me bṛhaspatiśca ma indraśca me mitraśca ma indraśca me
varuṇaśca ma indraśca me tvaṣṭā ca ma indraśca me dhātā ca ma indraśca me viṣṇuśca ma
indraśca me 'śvinau ca ma indraśca me marutaśca ma indraśca me viśve ca me devā
indraśca me pṛthivī ca ma indraśca me 'ntarikṣam ca ma indraśca me dyauśca ma indraśca
me diśaśca ma indraśca me mūrdhā ca ma indraśca me prajāpatiśca ma indraśca me ॥ 6 ॥

अ॒श्नुश्च॑ मे र॒श्मिश्च॑ मेऽदा॑भ्यश्च॒ मेऽधि॑पतिश्च॒ म॒ उपा॑श्नुश्च॒ मेऽन्तर्या॑मश्च॒ म॒ ऐन्द्र॑वायश्च॒ मे
मैत्रा॑वरु॒णश्च॑ म॒ आश्वि॑नश्च॒ मे प्रति॑प्र॒स्थान॑श्च॒ मे शु॒क्रश्च॑ मे म॒न्थी च॑ म॒ आग्र॑यणश्च॒ मे वैश्व॑दे॒वश्च॑ मे
ध्रु॒वश्च॑ मे वैश्वान॑रश्च॒ म॒ ऋतु॑ग्र॒हाश्च॑ मेऽति॒ग्राह्या॑श्च॒ म॒ ऐन्द्रा॑ग्रश्च॒ मे वैश्व॑दे॒वाश्च॑ मे मरु॒त्वती॑याश्च॒ मे
माहेन्द्र॑श्च॒ म॒ आदि॑त्यश्च॒ मे सावि॑त्रश्च॒ मे सा॒रस्व॑तश्च॒ मे पौ॒ष्णश्च॑ मे पा॒त्नीव॑तश्च॒ मे हा॒रियो॑ज॒नश्च॑ मे ॥
७ ॥

aṁśuśca me raśmiśca me 'dābhyaśca me 'dhipatiśca ma upaṁśuśca me 'ntaryāmaśca ma
aindravāyaśca me maitrāvaruṇaśca ma āśvinaśca me pratiprasthānaśca me śukraśca me
manthī ca ma āgrayaṇaśca me vaiśvadevaśca me dhruvaśca me vaiśvānaraśca ma
ṛtugrahāśca me 'tigrāhyāśca ma aindrāgnaśca me vaiśvadevāśca me marutvatīyāśca me
māhendraśca ma ādityaśca me sāvitraśca me sārasmataśca me pauṣṇaśca me pātnīvataśca
me hāriyojanaśca me ॥ 7 ॥

इ॒ध्मश्च॑ मे ब॒र्हिश्च॑ मे वेदि॑श्च॒ मे धि॒ष्णि॑याश्च॒ मे स्रु॑चश्च॒ मे च॒मसा॑श्च॒ मे ग्रा॒वा॑णश्च॒ मे स॒वर॑वश्च॒
म॒ उप॑र॒वाश्च॑ मेऽधि॒षव॑णे च॒ मे द्रो॑णक॒लश्च॑ मे वा॒यव्या॑नि च॒ मे पू॒तभृ॑च्च॒ म॒ आध॑व॒नीय॑श्च॒ म॒

आग्नीध्रं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्च मे सदश्च मे पुरोडाशाश्च मे पचताश्च मेऽवभृथश्च मे
स्वगाकारश्च मे ॥ ८ ॥

idhmaśca me barhiśca me vediśca me dhiṣṇiyāśca me srucāśca me camasāśca me
grāvāṇaśca me svaravaśca ma uparavāśca me'dhiṣavāṇe ca me droṇakalaśca me
vāyavyāni ca me pūtabhṛccā ma ādhavanīyāśca ma āgnīdhram ca me havirdhānam ca me
grhāśca me sadaśca me puroḍāśāśca me pacatāśca me'vabhṛthaśca me svagākāraśca me ।।
8 ।।

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे
दितिश्च मे द्यौश्च मे शक्करीरङ्गुलयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्तामृक् च मे साम च मे स्तोमश्च मे
यजुश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म ऋतुश्च मे व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्द्रथन्तरे च मे यज्ञेन
कल्पेताम् ॥ ९ ॥

agniśca me gharmaśca me'rkaśca me sūryaśca me prāṇaśca me'svamedhaśca me pṛthivī ca
me'ditiśca me ditiśca me dyauśca me śakkkarīraṅgulaḥ diśāśca me yajñena kalpantāmṛk
ca me sāmā ca me stomaśca me yajuśca me dīkṣā ca me tapaśca ma ṛtuśca me vratam ca
me'horātrayōrṛṣṭyā bṛhadrathantare ca me yajñena kalpetām ।। 9 ।।

गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे
पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे षष्ठा च मे षष्ठौही च म उक्षा
च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनङ्गाश्च मे धेनुश्च म आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन
कल्पतामपानो यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां
मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ॥ १० ॥

garbhāśca me vatsāśca me tryaviśca me tryavī ca me dityavāṭ ca me dityauhī ca me
 pañcāviśca me pañcāvī ca me trivatsaśca me trivatsā ca me turyavāṭ ca me turyauhī ca me
 paṣṭhavāṭ ca me paṣṭhauhī ca ma ukṣā ca me vaśā ca ma ṛṣabhaśca me vehacca
 me'naḍvāñca me dhenuśca ma āyuryajñena kalpatām prāṇo yajñena kalpatāmapāno
 yajñena kalpatām vyāno yajñena kalpatām cakṣuryajñena kalpatām śrotraṁ yajñena
 kalpatām mano yajñena kalpatām vāgyajñena kalpatāmātmā yajñena kalpatām yajño
 yajñena kalpatām ।। 10 ।।

एका च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे सप्त च मे नव च म् एकादश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे
 सप्तदश च मे नवदश च म् एकविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे
 सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च म् एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च
 मे द्वादश च मे षोडश च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे द्वात्रिंशच्च मे
 षड्विंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च मे वाजशच
 प्रसवश्चापिजश्च कर्तुश्च सुवश्च मूर्धा च व्यश्रियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च
 भुवनश्चाधिपतिश्च ॥ ११ ॥

ekā ca me tisraśca me pañca ca me sapta ca me navā ca ma ekādaśa ca me trayodaśa ca me
 pañcadaśa ca me saptadaśa ca me navadaśa ca ma ekaviṁśatiśca me trayoviṁśatiśca me
 pañcaviṁśatiśca me saptaviṁśatiśca me navaviṁśatiśca ma ekatriṁśacca me
 trayastriṁśacca me catasraśca me'ṣṭau ca me dvādaśa ca me ṣoḍaśa ca me viṁśatiśca me
 caturviṁśatiśca me'ṣṭāviṁśatiśca me dvātriṁśacca me ṣaṭtriṁśacca me catvariṁśacca me
 catuścatvāriṁśacca me'ṣṭācatvāriṁśacca me vājaśca prasavaścāpijaśca kratuśca suvaśca
 mūrdhā ca vyaśniyaścāntyāyanaścāntyaśca bhauvaṇaśca bhuvanaścādhipatiśca ।। 11 ।।

ॐ इडा देवहूरमनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शंसिषद्विश्वेदेवाः सूक्तवाचः पृथिवीमातर्मा मा
 हिंसीरमधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासः

शुश्रूषे॑ण्या॑ म॒नुष्ये॑भ्य॒स्तं मा॑ दे॒वा अ॑वन्तु शो॒भायै॑ पि॒तरोऽनु॑मदन्तु ॥

om iḍā devahūrmanūryajñanīrbrhaspatirukthāmadāni śaṁsiṣadviśvedevāḥ sūktavācaḥ
pṛthivīmātaṛmā mā hiṁsīrmadhū maṇiṣye madhū jaṇiṣye madhu vakṣyāmi madhu
vadiṣyāmi madhumatīm devebhyo vācamudyāsaṁ śuśrūṣeṇyām maṇiṣyēbhyastam mā
devā avantu śobhāyai pitaro'numadantu । ।

॥ ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॒ ॥

। । om śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ । ।

॥ इति श्री कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहितायां चतुर्थकाण्डे सप्तमः प्रपाठकः ॥

। । iti śrī kṛṣṇayajurvedīya taittirīya saṁhitāyām caturthakāṇḍe saptamaḥ prapāṭhakaḥ । ।